प्रगाथः काण्वः।इन्द्रः। गायत्री।

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः।अव ब्रह्मद्विषो जहि॥ ८.०६४.०१

अद्रिवः- वज्रिन्। त्वा- त्वाम्। स्तोमाः- मन्त्राः। मन्दन्तु- तोषयन्तु। राधः- संसिद्धिम्। कृणुष्व- कुरु। ब्रह्मद्विषः- ब्राह्मणद्वेष्टॄन्। अव जहि- नाशय ॥१॥

पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि।नहि त्वा कश्चन प्रति॥ ८.०६४.०२

अराधसः- असंसिद्धीन्। पणीन्- लोभिनः। पदा- पादेन। नि- नितराम्। बाधस्व। महान्- महात्मा। असि- भवसि। त्वा- त्वाम्। कश्चन- कश्चिदपि। नहि। प्रति- प्रतिगच्छति ॥२॥

त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्।त्वं राजा जनानाम्॥ ८.०६४.०३

इन्द्र। त्वम्। सुतानाम्- निष्पादितरसानाम्।असुतानाम्- अनिष्पादितरसानामपि। ईशिषे- स्वामित्त्वं वहसि। त्वम्। जनानाम्- विशाम्। राजा- स्वामी भवसि ॥३॥

एहि प्रेहि क्षयो दिव्याँ३घोषञ्चर्षणीनाम्।ओभे पृणासि रोदसी॥ ८.०६४.०४

चर्षणीनाम्- प्रजानाम्। क्षयः- निवासं प्रति। दिवि- नभसि। आघोषन्- घोषयन्। एहि- आगच्छ। प्रेहि- प्रकर्षेणागच्छ। उभे रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। आ पृणासि- आपूरयसि ॥४॥

त्यं चित्पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणम्।वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ॥ ८.०६४.०५

त्यम्- तम्। पर्वतम्- मेघं गिरिं वा जडप्रतीकम्। शतवन्तं सहस्रिणम्- प्रभूतजीवोदकवन्तम्। स्तोतृभ्यः। वि- विशेषेण। रुरोजिथ- भञ्जनमकरोः ॥५॥

वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे।अस्माकं काममा पृण॥ ८.०६४.०६

सुते- रसे निष्पन्ने। वयम्। दिवा नक्तम्। त्वा- त्वाम्। हवामहे- आह्वयामः। अस्माकम्- नः। कामम्- इच्छाम्। आ पृण- आपूरय ॥६॥

क१ स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः।ब्रह्मा कस्तं सपर्यति॥ ८.०६४.०७

Dr Rangaji
WEBOLIM

क्व- कुत्र। स्यः- सः। वृषभः- वर्षकः। युवा- तरुणः। तुविग्रीवः- विस्तीर्णग्रीवः। अनानतः। कः। ब्रह्मा- मन्त्रवित्। तम्। सपर्यति- परिचरति ॥७॥

कस्य स्वित्सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति। इन्द्रं क उ स्विदा चके॥ ८.०६४.०८

कस्य। सवनम्- सम्भजनम्। वृषा- वर्षकः। जुजुष्वान्- सेवमानः। अव गच्छति। इन्द्रम्। कः। आ चके- जानाति ॥८॥

कं ते दाना असक्षत वृत्रहन्कं सुवीर्या। उक्थे क उ स्विदन्तमः॥ ८.०६४.०९

ते- त्वाम्। दानाः। असक्षते- सेवन्ते। वृत्रहन्- आवरणबाधक। कम्। सुवीर्या- शोभनवीर्याणि। सेवन्ते। उक्थे- मन्त्रसिद्धौ। कः। अन्तमः- भवन्निकटस्थो भवेत् ॥९॥

अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते। तस्येहि प्र द्रवा पिब॥ ८.०६४.१०

अयम्- एषः। सोमः- रसः। ते- त्वदर्थम्। मानुषे जने। पूरुषु- पूरकेषु। सूयते- निष्पाद्यते। तस्य- तम्। आ इहि- आगच्छ। प्र- प्रकर्षेण। द्रव- तं धाव। पिब- अनुभव ॥१०॥

अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः। आर्जीकीये मदिन्तमः॥ ८.०६४.११

शर्यणावति- अन्तरिक्षे प्राणमयकोशे। शर्यणोऽन्तरिक्षदेशस्तस्यादूरभव इति दयानन्दः। सुषोमायाम्- शोभनरसमय्यां नद्याम्। अधि। अयम्- एषः। मदिन्तमः- अतिशयेन हर्षदो रसः। आर्जीकीये-आर्जवभावे। प्रियः। ते- त्वदर्थं सम्पादितः ॥११॥

तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये। एहीमिन्द्र द्रवा पिब॥ ८.०६४.१२

मदाय- हर्षाय तृप्तये। घृष्वये- शत्रुघर्षणाय। तम्- अमुं रसम्। चारुम्- कल्याणम्। महे- महत्यै। राधसे- संसिद्धयै। अद्य- इदानीम्। इन्द्र। एहि- आगच्छ। द्रव- धाव। पिब- अनुभव ॥१२॥

Dr. Ranganji
WEBOLIM